जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

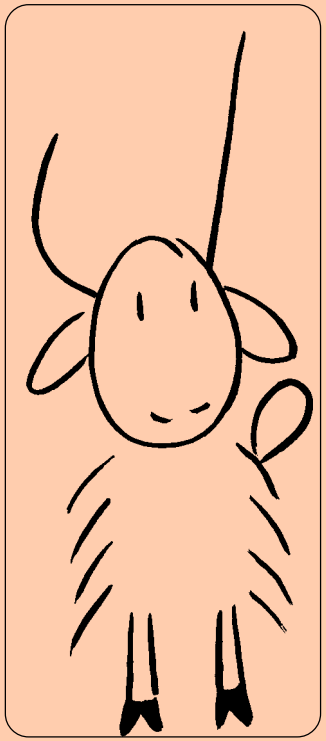

‘‘ किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ’’

–सफ़दर हाश्मी

बोबक बकरा, नेताओं के पीछे-पीछे घूमते हुए परेशान हो जाता है। अंत में वो निश्चय करता है कि अब वो एक जगह से दूसरी जगह केवल इसलिए नहीं जाएगा क्योंकि दूसरे लोग भी वहां जा रहे हैं। अब वो खुद सोचेगा कि उसे कहां जाना है, क्यों जाना है और कैसे जाना है? अब बोबक खुद अपने आप सोचता है। वो पहले से कहीं ज़्यादा खुश है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 10 रुपए B - 32 Price : 10 Rupees

बोबक बकरा

मनरो लीफ

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

बोबक बकरा: मनरो लीफ

BOBAK BAKRA : Munro Leaf

प्रस्तुति : अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

रेखांकन: अविनाश देशपांडे
(मनरो लीफ के मूल चित्रों पर आधारित)
लेजर ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

पांचवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 10 रुपये

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block Saket ,
New Delhi - 110017
Phone : 26569943, Fax : 26569773,
Email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset , New Delhi - 110018

बोबक बकरा

मनरो लीफ

बोबक बकरा

मनरो लीफ

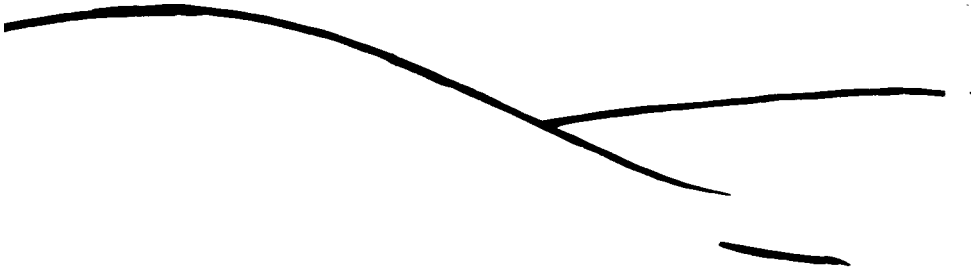

एक बकरा था।
उसका नाम था बोबक।
वह राजस्थान में रहता था।

उसे बस खाने का शौक था।
उसे जो भी मिलता वह उसे चट कर जाता।
वह क्या खा रहा है इस बात की
उसे बिल्कुल भी परवाह नहीं थी।
उसे जो कुछ भी दिखता
वह उस पर अपना मुंह मार देता।

वैसे तो उसे बबूल के पेड़ के पत्ते
और फलियां ही
सबसे अच्छी लगती थीं।

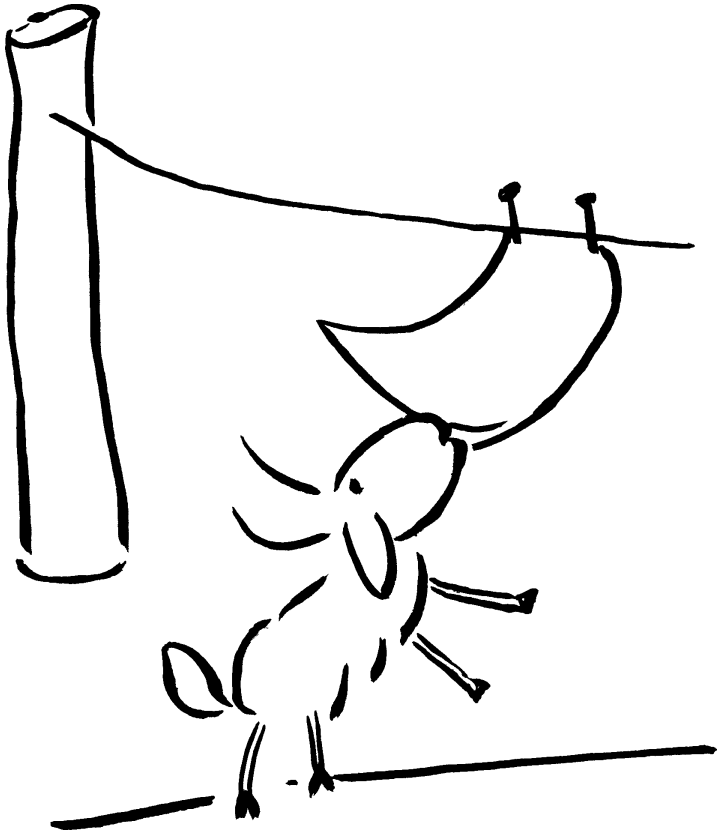

परंतु अगर रास्ता चलते
उसे किसी रस्सी पर लटकते कपड़े दिखाई देते
तो वह उन पर भी मुंह मारने से नहीं चूकता था।

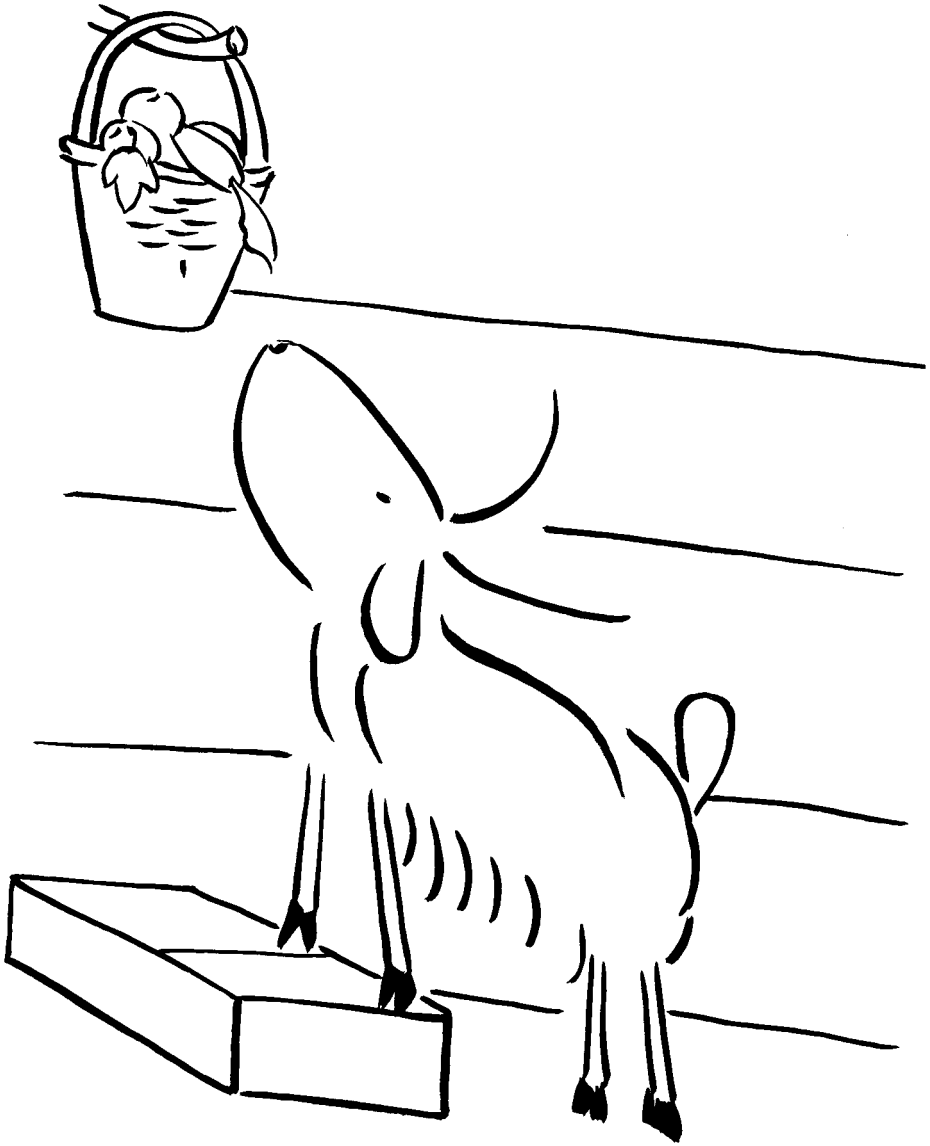

कभी वह किसी के रसोईघर में घुस जाता।
वहां वह ऊंचाई से लटकी
सब्ज़ी की टोकरी पर
मुंह मारने की कोशिश करता।

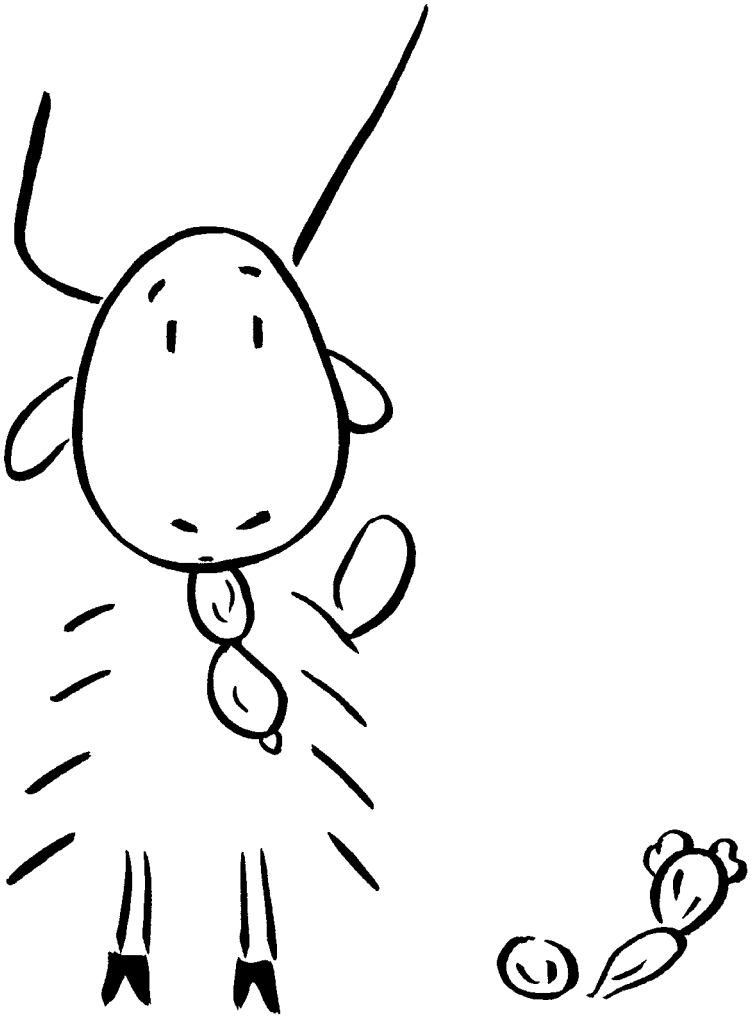

कभी-कभी वह कांटेदार नागफनी
पर भी मुंह मार देता था।
लेकिन ऐसा करने के बाद
उसे बहुत पछताना पड़ता था।

अन्य बकरों के साथ बोबक भी एक बाड़े में रहता था।
वहां उसे कोई खास काम नहीं करना पड़ता था।
वह दिन भर सोता रहता और खाना खाता।
यही उसका काम था।
कुछ महीनों बाद एक आदमी आकर
उसके बाल काट देता था।

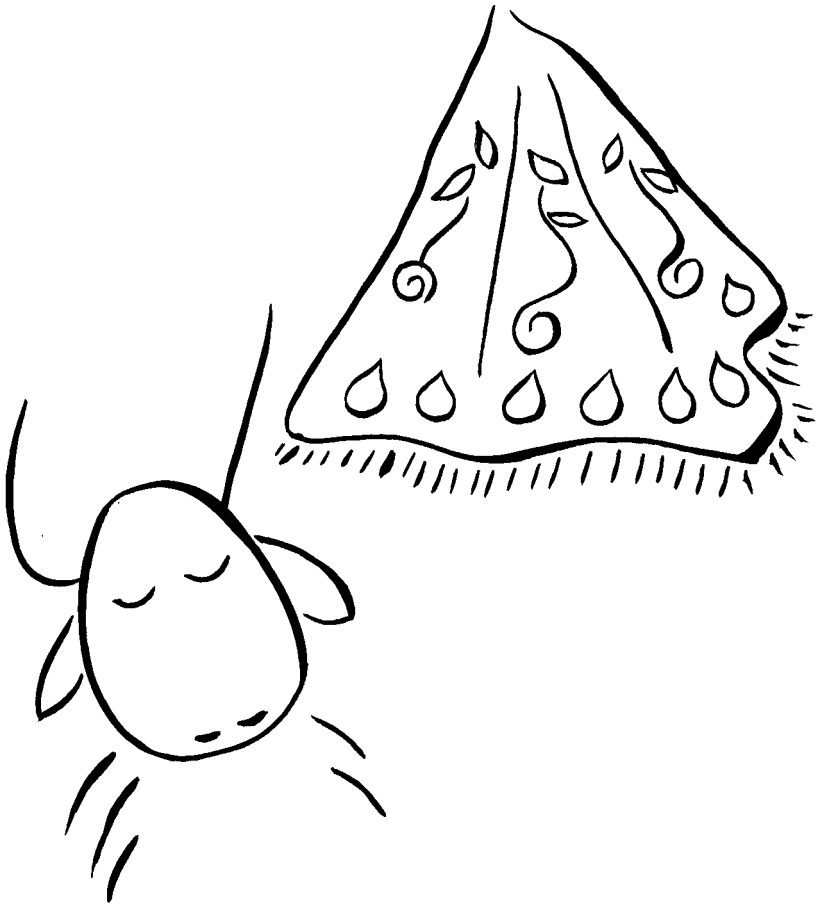

कुछ लोग इन बालों को खरीद लेते थे।
ये लोग इन बालों से नमदे बनाते या उन्हें गद्दों में भर देते।
बोबक की बला से!
उसके बालों से क्या बनता है,
इससे भला उसे क्या लेना-देना।
उसे तो बस इस बात से मतलब था
कि लोग बाल काटते समय
कहीं उसकी खाल न काट दें।

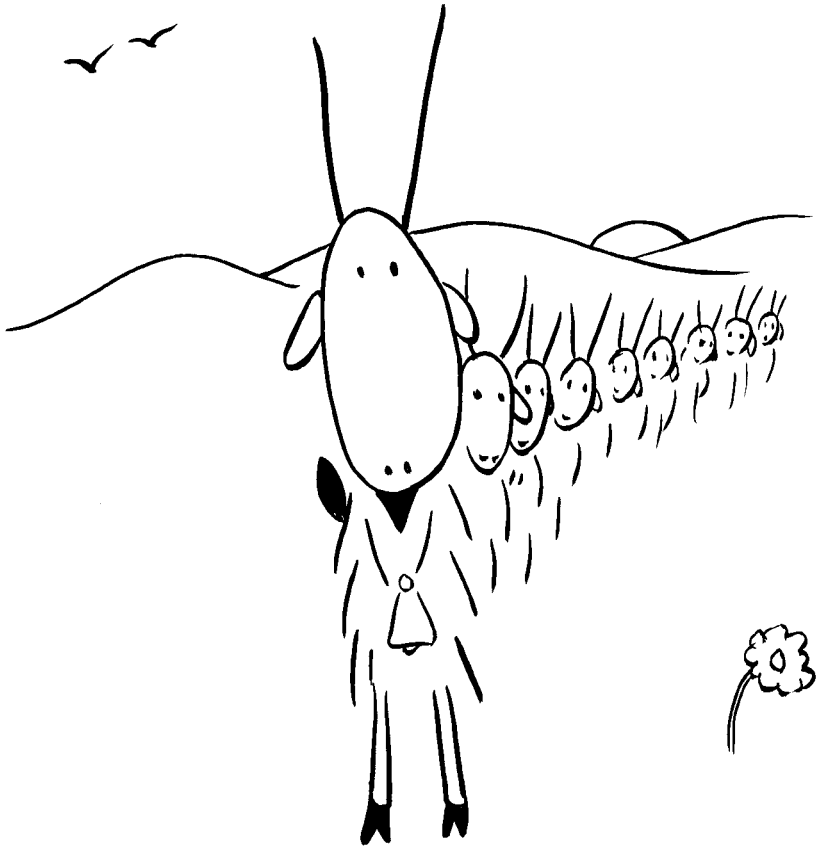

बोबक के बाड़े में कुछ अगुआ बकरे रहते थे।
वे जहां भी जाते बाकी बकरे उनके पीछे-पीछे जाते।
जब नेता बकरे का एक जगह से मन भर जाता
तो वह किसी दूसरे स्थान की ओर चल पड़ता।
बाकी बकरे भी अपनी दुम हिलाते-हिलाते उसके पीछे हो लेते।
नई जगह कभी पहले वाली से अच्छी होती और कभी बुरी।
लेकिन जगह अच्छी हो या बुरी,
दूसरे बकरे हमेशा अपने नेता
के पीछे-पीछे ही चलते।

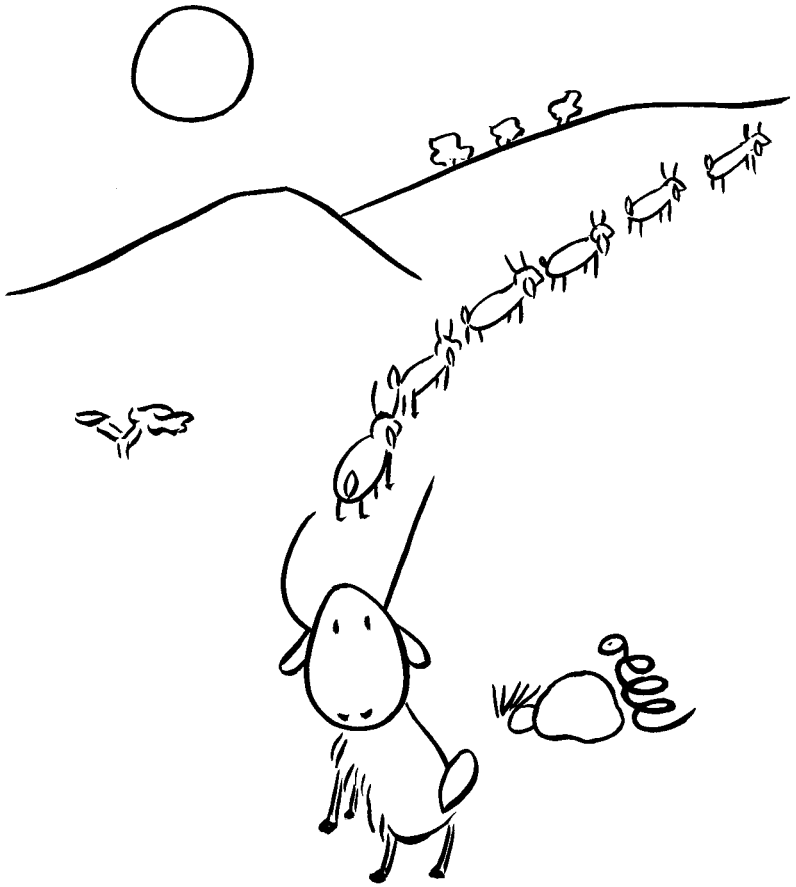

बोबक भी बाकी बकरों की तरह नेता
बकरे के पीछे-पीछे चलता था।
पता नहीं वह ऐसा क्यों करता था।
उसे नेता बकरे कोई खास अच्छे नहीं लगते थे।
परंतु उनमें से कोई उसे बहुत बुरा भी नहीं लगता था।
इसलिए जब सारे बकरे नेता के पीछे चलते,
तो बोबक भी उनके साथ चल पड़ता।
शायद नेता के पीछे चलना ही सबसे आसान था।
लेकिन चलने से पहले वह इतनी देर तक सोचता रहता था
कि बाकी सब बकरे आगे निकल जाते थे
और वह सबसे पीछे रह जाता था।

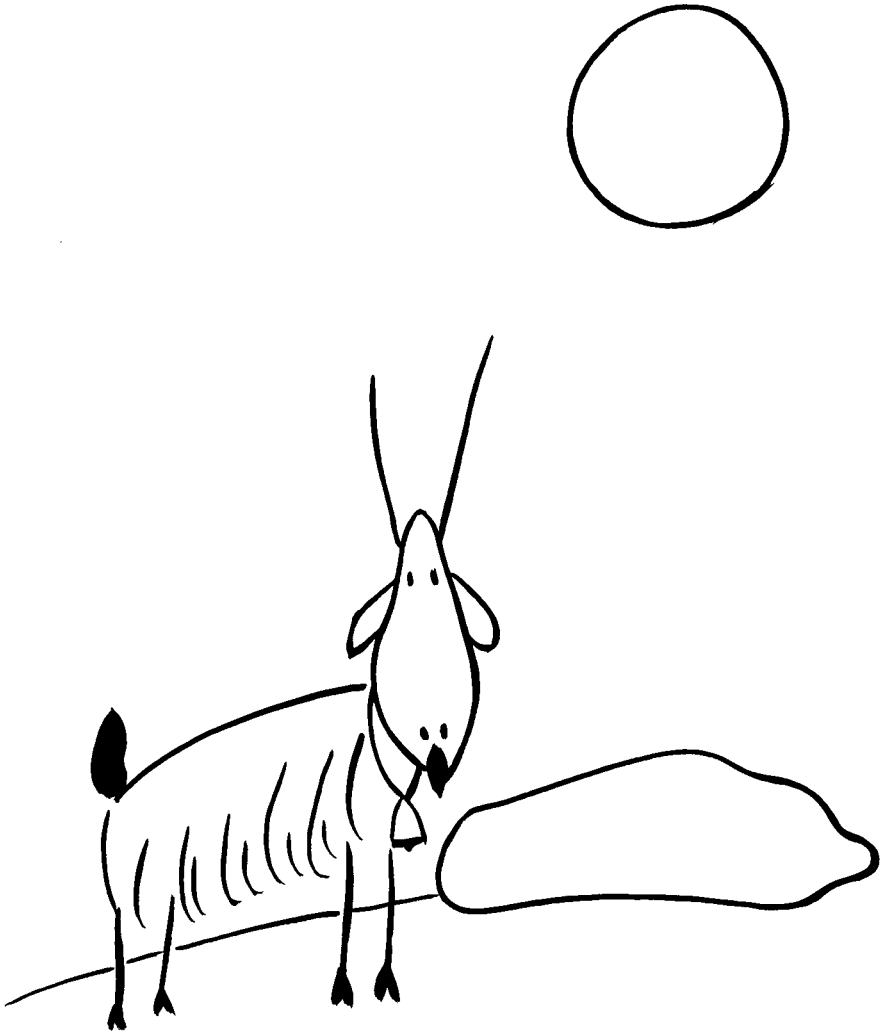

एक दिन बहुत गरमी पड़ रहा था।
नेता बकरे को वह जगह पसंद नहीं आई
और वह किसी दूसरी जगह की तलाश में चल पड़ा।
बाकी बकरे भी उसके पीछे-पीछे हो लिए।
बोबक भी चला।
लेकिन वह सबसे पीछे था।

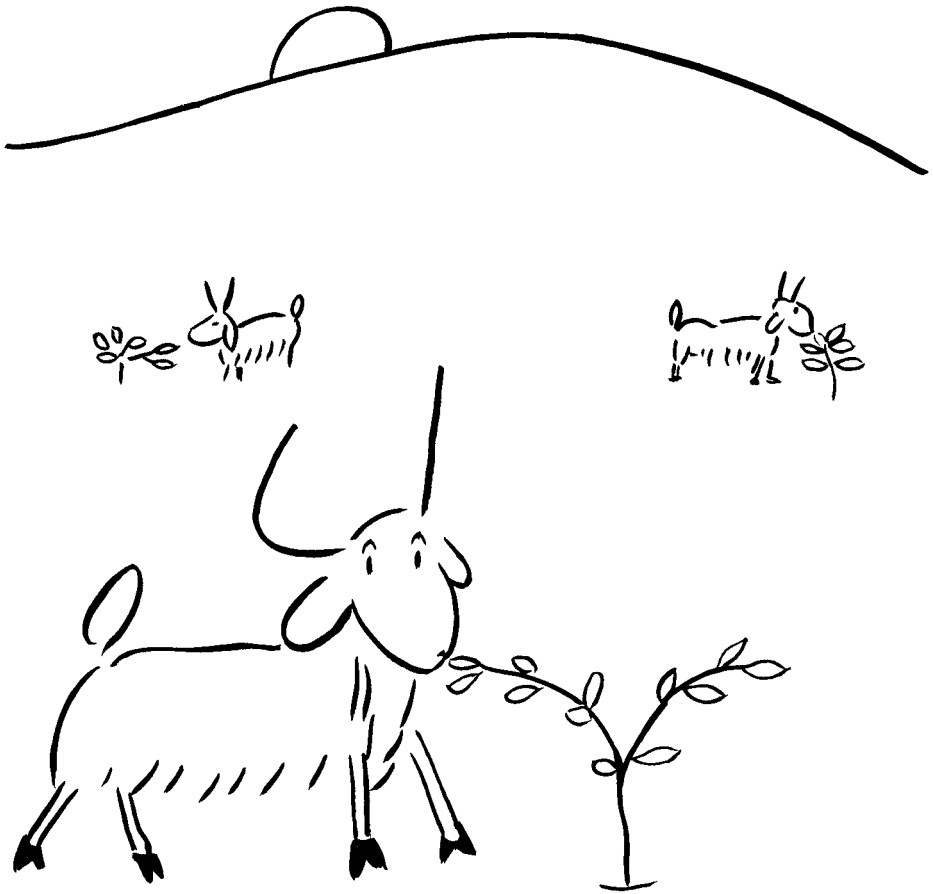

चलते-चलते उन्हें बहुत देर हो गई।
सूरज की गरमी से पूरी पहाड़ी तपने लगी।
उन्हें घास का नया मैदान तो मिल गया
परंतु वहां की घास कोई खास नरम नहीं थी।
बोबक ने थोड़ी सी घास खाई
तो उसका जी मिचलाने लगा।
उसे लगा कि दूसरे बकरों के साथ
यहां आकर उसने ठीक नहीं किया है।

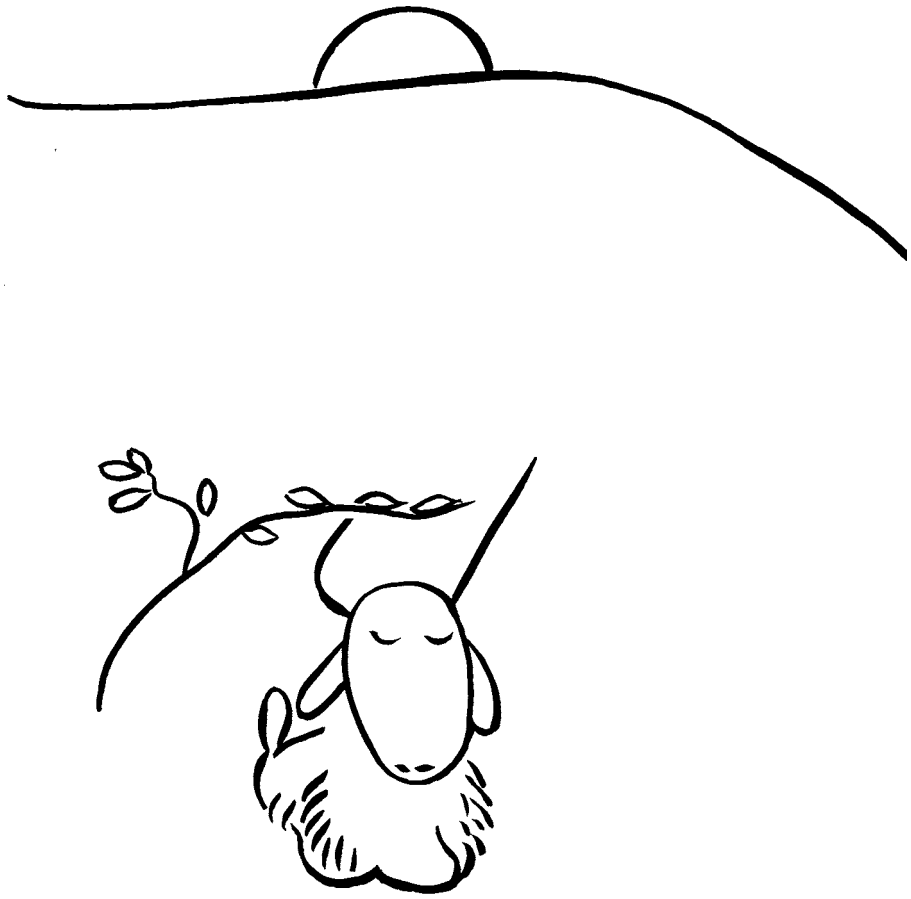

इसलिए वह वहीं बैठ गया।
उसने तय किया कि
जब तक उसका जी अच्छा नहीं हो जाएगा
वह वहां से नहीं उठेगा।
लेकिन अभी बोबक बस बैठा ही था
कि नेता बकरे ने कहीं और जाने की ठान ली।

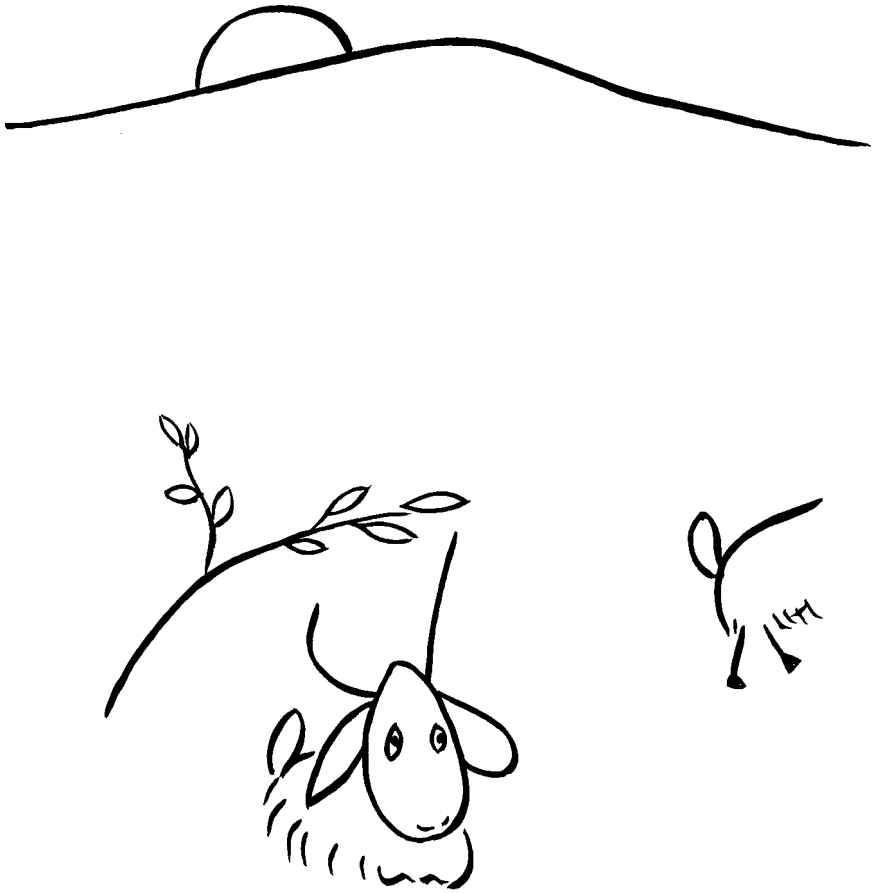

नेता बकरा चल पड़ा।
बाकी बकरे उसके पीछे-पीछे हो लिए।
बोबक सबसे पीछे था।
सच तो यह था
कि वह वहां से
जाना ही नहीं चाहता था।

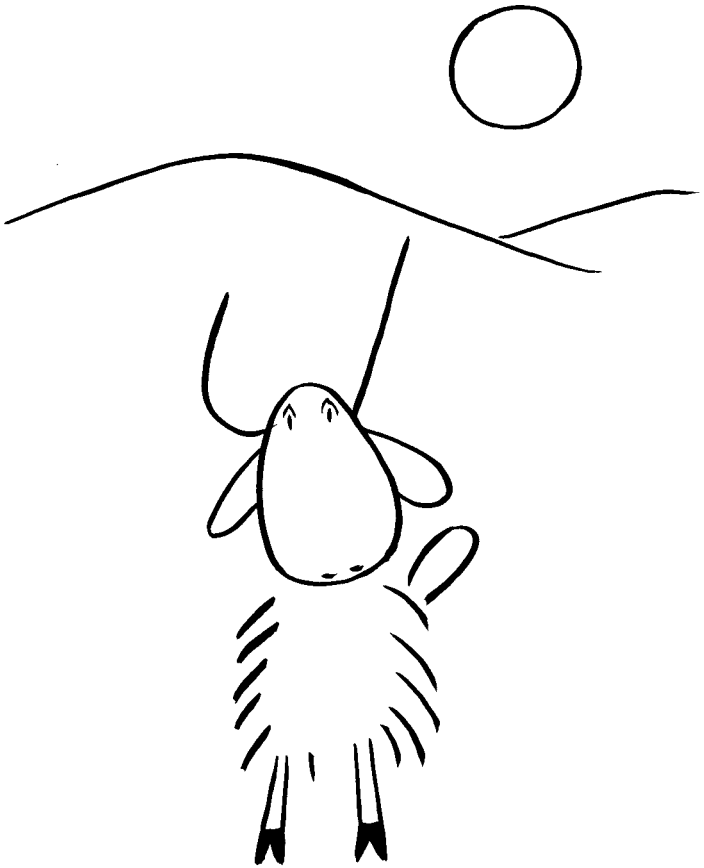

सूरज की तपती धूप में चलते-चलते
बोबक सोचने लगा कि वह सबके साथ क्यों आया?
सब बकरे नेता के पीछे दुम दबा कर क्यों चल पड़ते हैं?
अभी तक वह भी क्यों दूसरों के पीछे-पीछे चलता रहा।
शायद दूसरे बकरे नेता के पीछे हमेशा से ही चल रहे हैं।
नेता के पीछे चलने की उनकी आदत पड़ गई है।
बोबक इन प्रश्नों के बारे में सोच रहा था।
पर अभी भी उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

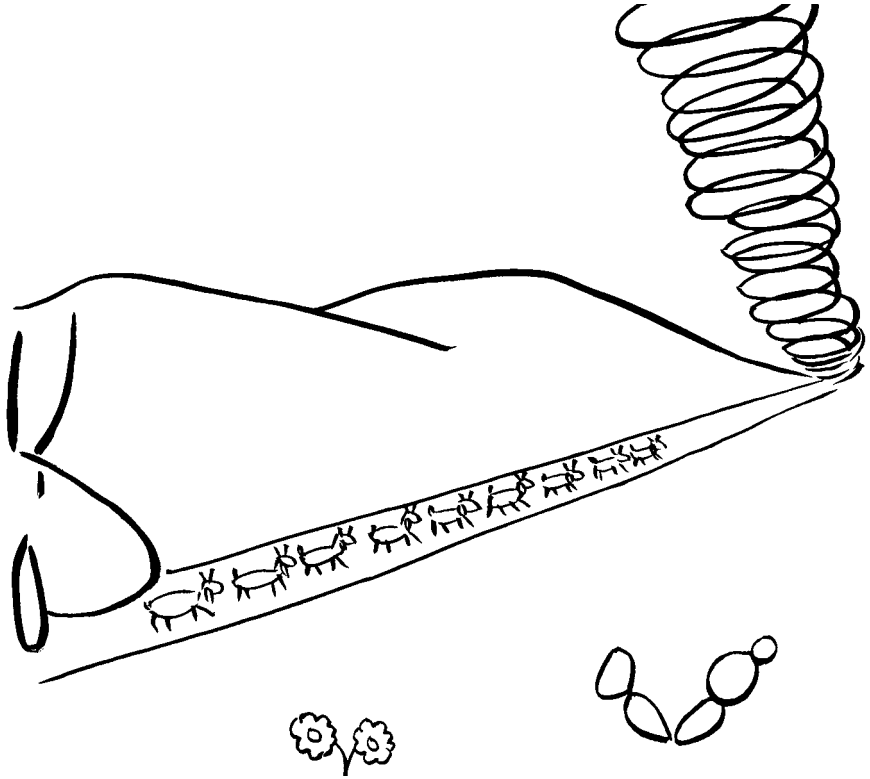

बोबक सोच में डूबा था।
तभी सामने से उसे एक बड़ी और काली धूल भरी चीज़
अपनी ओर आती दिखाई पड़ी।
वह ज़मीन से उठ कर आसमान तक चली गई थी।
बोबक ने आजतक इतनी बड़ी कोई चीज़ नहीं देखी थी।
बोबक को वह काली चीज़ बिल्कुल अच्छी नहीं लगी।
पर वह तेज़ी से उनकी ओर बढ़ती चली आ रही थी।
बोबक का भागने का दिल हुआ।
परंतु नेता बकरा सीधा उस काली चीज़ की ओर बढ़ता गया।
और वह काली चीज़ उनकी तरफ आती गई।

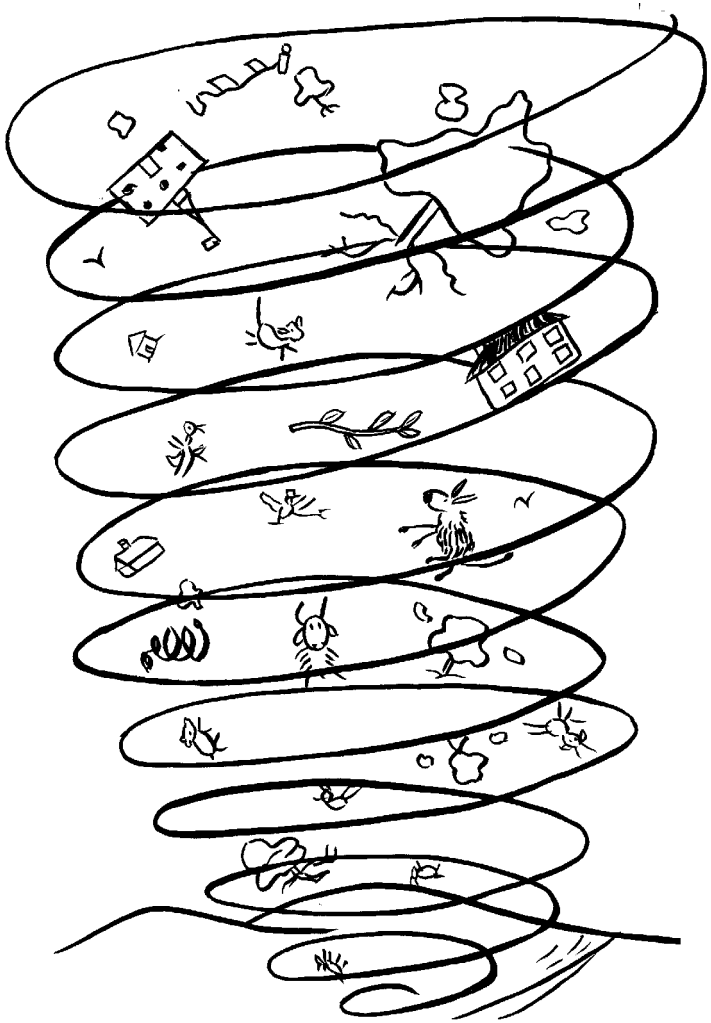

सभी बकरे बवंडर के बीच में जा फंसे।
बवंडर या आंधी में फंसना कोई मज़ेदार बात नहीं है।
बोबक तो सच में डर गया था।
पानी से भरे काले बादलों ने उसे ऊपर उछाल दिया।
तेज़ हवा उसे कभी इधर पटकती, कभी उधर।
बोबक तूफान की भंवर में खूब कलाबाज़ियां खाने लगा।

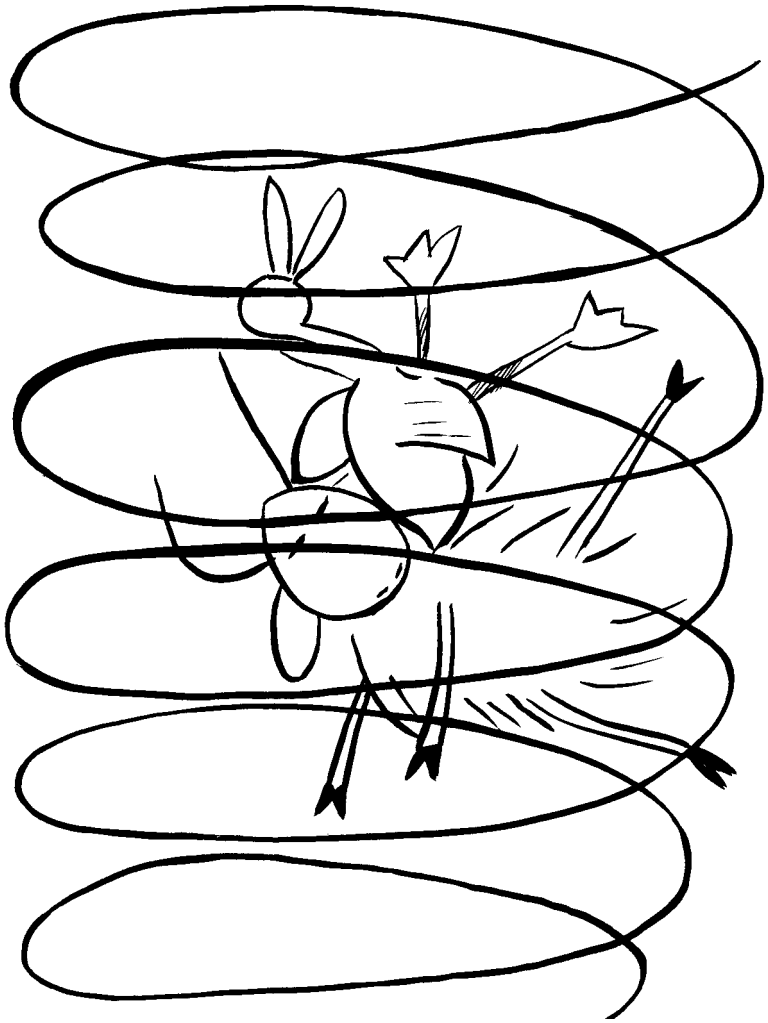

बवंडर में और भी कई चीज़ें फंस गयीं थीं।
ये चीज़ें बोबक से आकर टकराने लगीं।
थोड़ी देर में बोबक का सारा शरीर घायल हो गया
और उसका दम फूलने लगा।
बवंडर में चक्कर खाकर वह अपने किए पर पछताने लगा।
वह नई घास खाने के लिए नेता बकरे के पीछे क्यों गया?

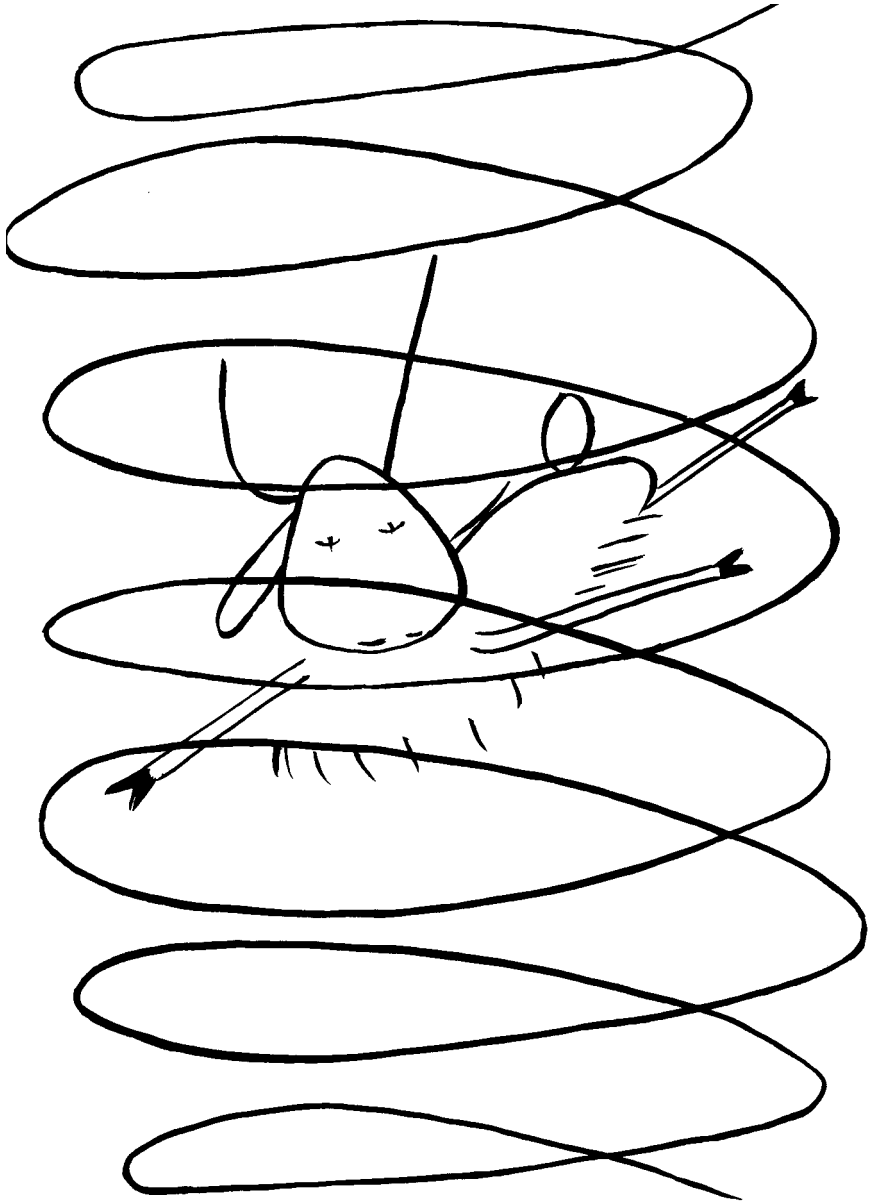

पहले तो बोबक का रंग पीला पड़ गया।

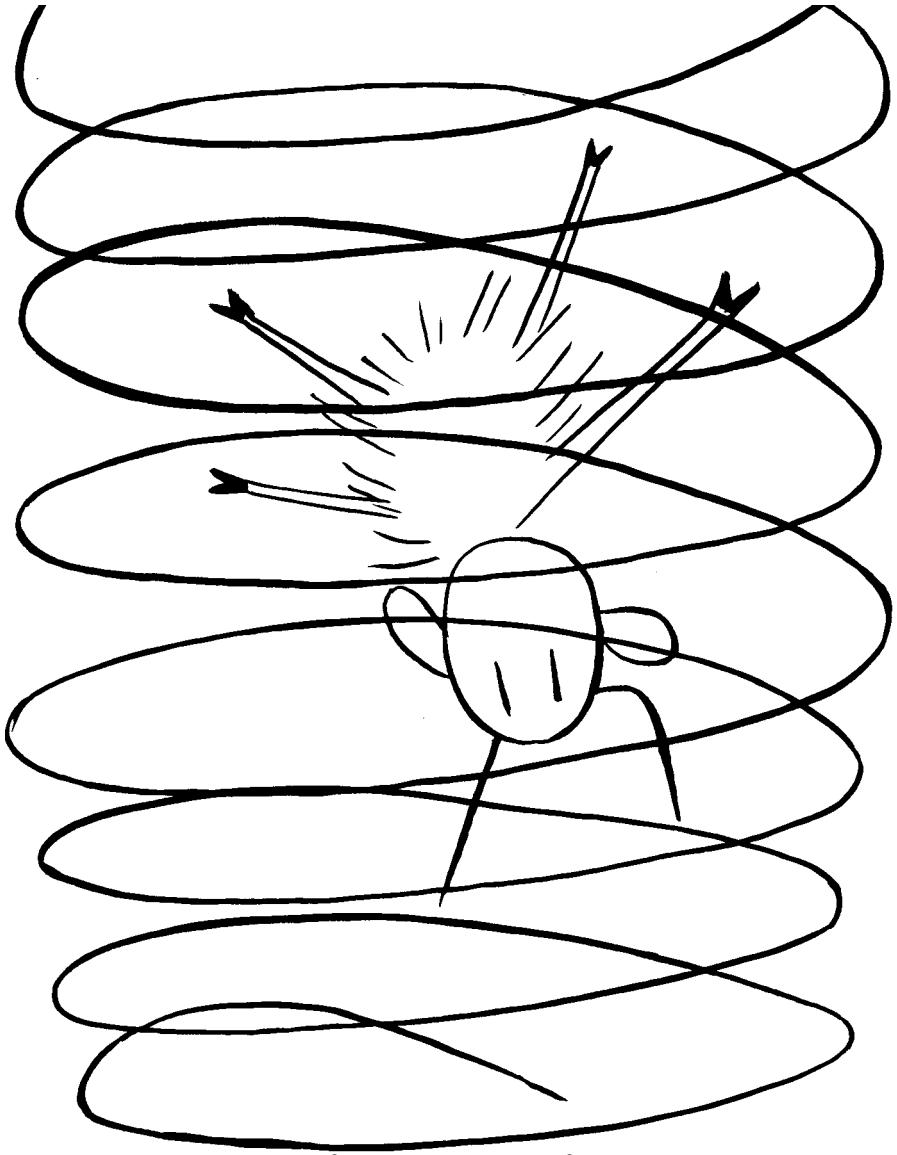

फिर बोबक का रंग हरा हो गया
और उसका जी मिचलाने लगा।
बोबक को अब अपने आप पर तरस आने लगा।
अब उसकी हालत बहुत खराब हो गई थी।
उसे लगने लगा कि वह अब बहुत देर तक ज़िंदा नहीं रहेगा।

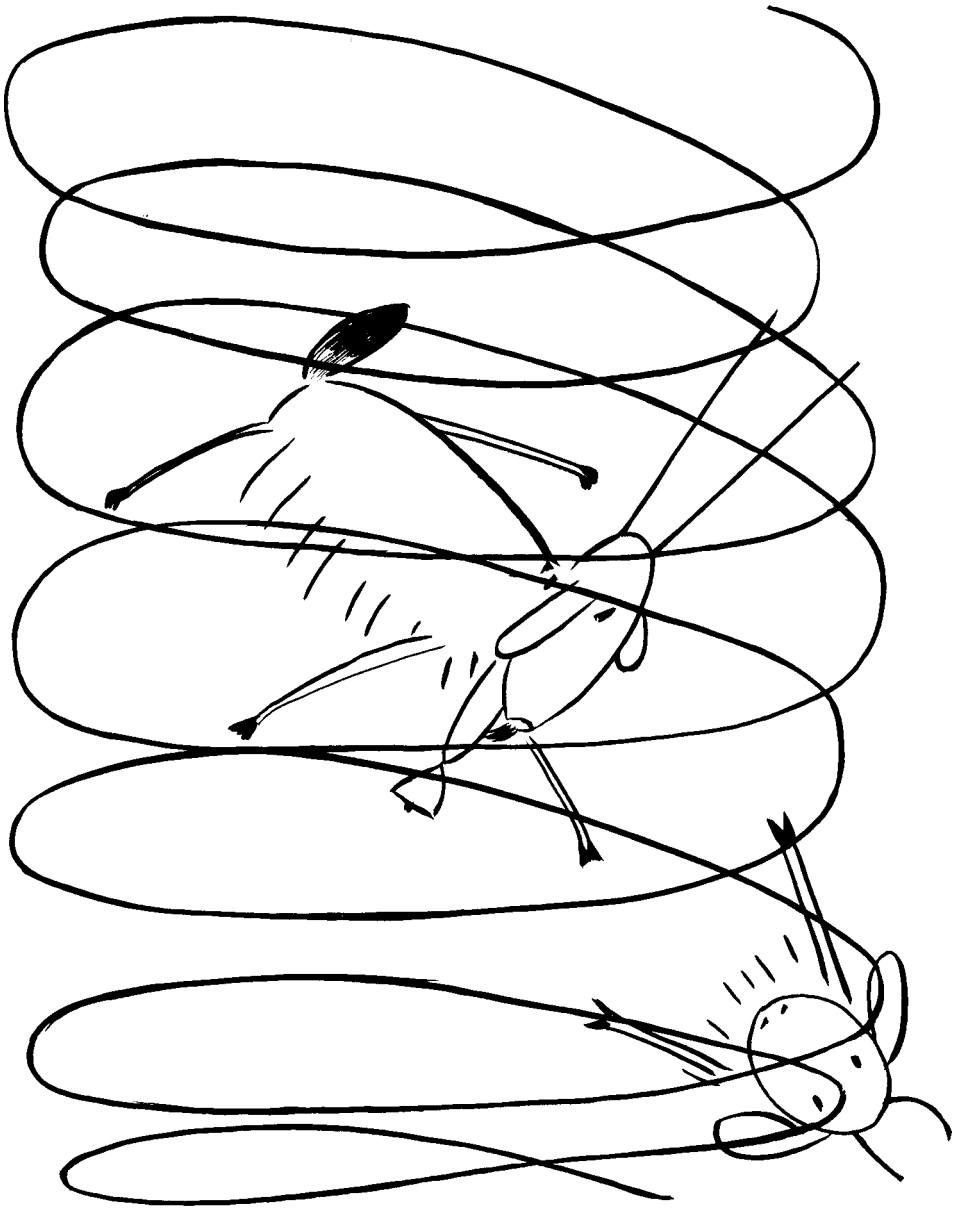

तभी बोबक ने नेता बकरे को भी बवंडर में
ऊपर उठते हुए देखा।
उसकी हालत तो बोबक से भी खराब थी।
इतने में हवा का एक तेज़ झोंका आया
और उसने बोबक को बवंडर के बाहर फेंक दिया।

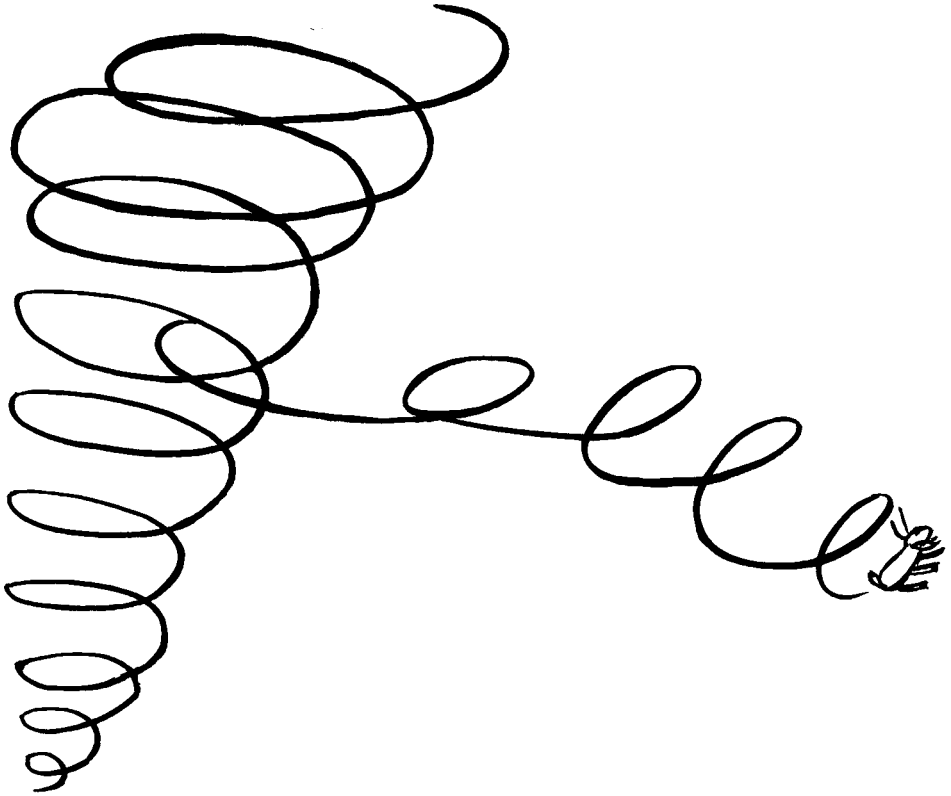

बोबक धम्म से एक खेत में जाकर गिरा।
खेत की मिट्टी नरम थी इसलिए
बोबक की हड्डियां तो नहीं टूटीं,
फिर भी उसे काफी चोट लगी।
काफी देर तक तो बोबक ऐसे ही पड़ा रहा।
फिर उसने उठ कर चारों ओर नज़र दौड़ाई।
उसका शरीर अकड़ गया था
और उसके हरेक अंग में दर्द हो रहा था।
लेकिन अब उसने एक नया सबक सीखा था।
वह इस सीख को कभी भी नहीं भूलेगा।

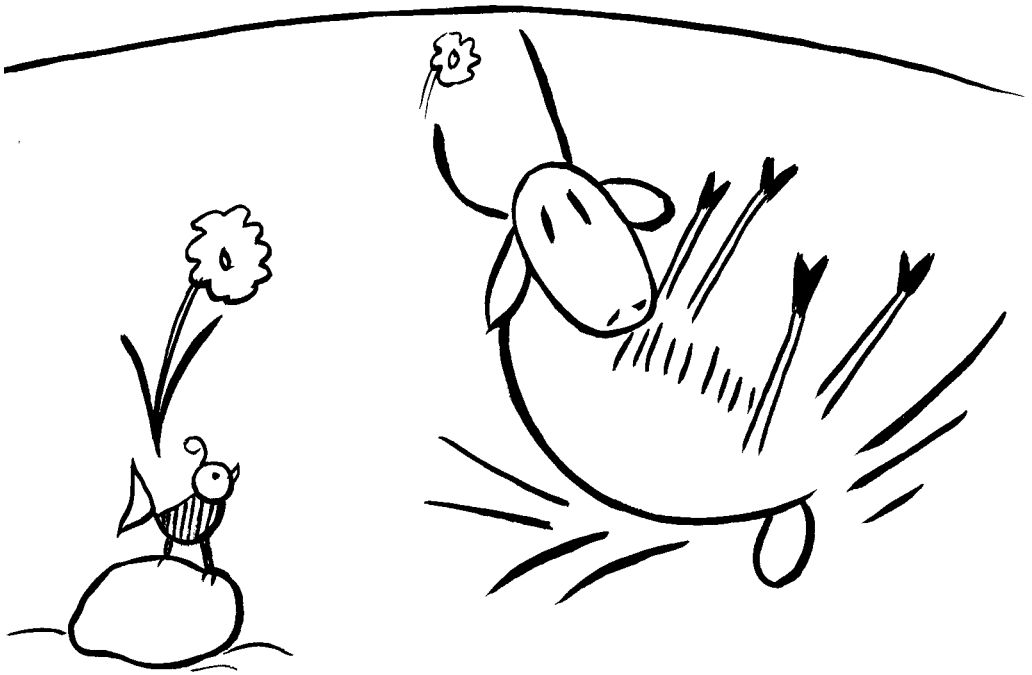

अब वह एक जगह से दूसरी जगह
केवल इसलिए नहीं जाएगा
कि दूसरे लोग भी वहां जा रहे हैं।
वह अब खुद सोचेगा
कि उसे कहां जाना है,
क्यों जाना है और कैसे जाना है?
आगे से वह अपनी मंज़िल खुद तय करेगा।

अब बोबक खुद
अपने-आप सोचता है।
वह अब पहले से
कहीं अधिक खुश रहता है।

❐❐❐